

दिनांक 10-01-2019

प्रतिवेदन उद्घाटन सत्र

आज दिनांक 10.01.2019 को शासकीय मानकुंवरवाई कला एवं वाणिज्य स्वशास्त्री महिला महाविद्यालय जबलपुर के समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय समाज में वृद्धजन' विषय पर प्रो० कपिल देव मिश्रा, कुलपति रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के मुख्य आतिथ्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रा. सी.एस.एस. ठाकुर विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र एवं डॉ. श्री भूपेन्द्र निगम के विशिष्ट आतिथ्य एवं देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अरविन्द कुमार जोशी एवं प्रो. आर.जी. भावे, सेवानिवृत्त प्राचार्य, रायपुर के विशिष्ट आतिथ्य तथा प्राचार्य डॉ. गीता श्रीवास्तव की अध्यक्षता में संगोष्ठी प्रारम्भ हुई।

संगोष्ठी संयोजक डॉ. सुषमा पेंडारकर, ने विषय प्रवर्तन किया। बीज वक्ता प्रोफेसर अरविन्द जोशी ने कहा कि आज युवाओं की संख्या बढ़ रही है। मूल्यों के संक्रमण के दौर में मूल्य टूट रहे हैं। आज वृद्धों की तीन श्रेणियाँ युवा वृद्ध 60-69 उसके बाद 70 से 79 तक वृद्ध और 80 के बाद वयोवृद्ध हैं। भारत में बुजुर्गों की 62 प्रतिशत जनसंख्या युवा वृद्ध की है लेकिन आने वाले 8 वर्षों में बुजुर्गों की संख्या बढ़ जायेगी।

आज विज्ञान और तकनीक का गठजोड़ है। आज ब्रेन कन्जरवेशन पर काम हो रहा है। आज वृद्धावस्था को रोकने का प्रयास किया जा रहा है। ड्रेगन फिश पर कार्य चल रहा है। विज्ञान की दृष्टि से समाज बहुत आगे बढ़ गया है, लेकिन हमारी सोच पुरानी है। बुजुर्गों को लॉग मेमोरी बनी रहती है और शार्ट मेमोरी समाप्त हो जाती है।

आज वृद्धों के हित के लिये कानून बन रहे हैं। अरविन्द जोशी ने समाज के अनेक उदाहरणों द्वारा भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति को प्रस्तुत किया। आँकड़े बताते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध अधिक हैं। शहरों में कम। वैश्वीकरण के कारण रोजगार के अवसर कम हैं। आज हम सभी का सामाजिक उत्तरदायित्व होना चाहिये कि वैश्वीकरण की चुनौतियों का विवेक पूर्ण तरीके से उसकी माँग के अनुरूप व्यवस्था बनाकर सामना करे जिसमें वृद्धों को अकेलापन न झेलना पड़े।

वृद्धों की तीन समस्याएँ प्रमुख है :-

1) गरीबी 2) चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा 3) सामाजिक मनोवैज्ञानिक समस्या उदाहरीकरण के कारण हाइटेक अस्पताल खुल गये हैं। लेकिन गरीबों के लिये इन अस्पतालों तक पहुँच नहीं है। वे प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में ही उपचार करा पाते हैं। सरकार ने आर्थिक सुरक्षा योजना लागू की है। वृद्ध लोग क्रिमनल्स के टारगेट हैं। अकेलापन से तनाव बढ़ता है। सरकार ने पेंशन योजना प्रारम्भ की

है। BPL श्रेणी के सभी वृद्ध पेंशन के अधिकारी होंगे। 2007 में एक्ट बनाया कि माता-पिता के कल्याण के लिये लड़का और लड़की दोनों ही उत्तरदायी होंगे। लेकिन माता-पिता सामाजिक कारणों से अपनी समस्याएँ नहीं बताते। कई लाख दिव्यांग वृद्ध भी देश में हैं। हम सभी को अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिये।

मुख्य अतिथि डॉ. कपिलदेव मिश्र कुलपति रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर ने कहा कि यह विषय बहुत प्रासंगिक है। भारतीय समाज में बुजुर्गों को सम्मान दिया जाता था। उन्होंने लोक जीवन से उदाहरण देकर बुजुर्गों और उनके अनुभवों का महत्व प्रतिपादित किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हम सभी को अपने परिवारों में बुजुर्गों को सम्मान देना चाहिये तथा व्यवहारिक धरातल पर चुनौती का समाधान ढूँढना होगा। समसामयिक चुनौती का हल नैतिक शिक्षा के माध्यम से किया जाना चाहिए।

प्रो० आर०जी० भावे मनोवैज्ञानिक, (रायपुर) ने कहा कि हम आशावादी हैं, हम सोने पे सुहागा ढूँढते हैं। गांधीजी और रवीन्द्र टैगोर के बीच का संवाद उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गांधी जी से कहा कि वृद्धावस्था में भी हमें अपना ध्यान ज्यादा रखना चाहिये। और गांधी जी ने कहा था कि उम्र का सम्मान करना चाहिये।

1) सक्रिय रहना चाहिये, सकारात्मक होना चाहिये। वृद्धों की जो समस्याएँ हैं, उनके लिये काउंसलिंग होनी चाहिये। रायपुर में जिला प्रशासन ने वापू की कुटिया योजना प्रारम्भ की है। यह वृद्धजनों के लिये है यहाँ मनोरंजन के साधन हैं, रीडिंग रूम है। बुजुर्गों को अपने जीवन में जीवंतता बनाये रखनी चाहिये। श्याम मनोहर जी ने कहा है कि बुजुर्गों को अपनी आर्थिक मजबूती रखनी चाहिये। बच्चे यदि आपकी सेवा नहीं करते तो उनका रोना मत रोइये। अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति अपने पास रखिये।

प्रो० सी० एस० एस० ठाकुर ने कहा कि हर एक व्यक्ति दूसरे का आलोचक बनता जा रहा है। वृद्धों में अकेलापन बड़ी समस्या है। वृद्धों की जनसंख्या 8.6 प्रतिशत है। अकेलापन अनुभव करना समस्या है। शिक्षण संस्थाओं को वृद्धों के पुनर्वास के लिये कार्य करना चाहिये। यह मेरा सुझाव है कि सरकार को उत्पादक जनसंख्या आयु का रचनात्मक उपयोग करना चाहिए।

डॉ. भूपेन्द्र निगम ने कहा कि समाज में आज भी ऐसे उदाहरण हमारे परिवार और समाज में हैं, जो अपने बुजुर्गों से अच्छा व्यवहार करता है, इसका प्रचार एवं प्रसार जनसंचार के माध्यम से होना चाहिए जिससे समाज में एक सकारात्मक सोच बनेगी। वृद्धजनों को भी अपने बच्चों से ज्यादा अपेक्षाएँ नहीं रखनी चाहिये। बच्चों को एक सकारात्मक सोच विकसित करनी चाहिये। बुजुर्गों को अपनी सुखद स्मृति को संजोना चाहिये। हमारा प्रयास यह होना चाहिये कि इस प्रकार की संगोष्ठियों के जो निष्कर्ष निकलते हैं, उनको समाज तक पहुँचना चाहिये जिससे समाज में सकारात्मक पक्ष वृद्धजन के प्रति बनेगा।

प्राचार्य, डॉ. गीता श्रीवारस्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि किसी भी संगोष्ठी की सफलता उसमें सहभागी विद्वत जनों से ही है। यह विषय बहुत व्यापक है। डॉ. गीता श्रीवारस्तव ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानी बूढ़ी काकी में कहा है कि बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है। हमने अपनी पुरानी संस्कृति के आदर्शों को भुला दिया आज हम पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में हैं। वृद्धों को यदि उपेक्षित किया जाता है तो वे दुखी होते हैं। अतः शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश कर भारतीय समाज की संस्कृति के मूल्यों का पुनर्स्थापना करना अपेक्षित है।

प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्षता डॉ. विभा जोशी एवं डॉ. रजनीश जैन ने किया। प्रतिवेदक डॉ० मीनू मिश्रा, डॉ. स्मृति शुक्ला ने किया। डॉ० रजनीश जैन ने कहा कि वृद्धावस्था एक चुनौती है इसे स्वीकार करने की आवश्यकता है। डॉ. विभा जोशी ने वृद्ध रित्रयों की स्थिति पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। ग्वालियर से आये शोधार्थी प्रभाकर सिंह ने प्राचीन काल एवं आज की समाज व्यवस्था में वृद्धों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। सिहोरा की प्रो. अरूणा पाडेय ने जैव वैज्ञानिक दृष्टि से वृद्धावस्था को प्रस्तुत किया। तीन तकनीकी सत्रों में कुल 55 शोध पर प्रस्तुत किये गये। जबलपुर के अतिरिक्त भोपाल, ग्वालियर, सिहोरा, बरगी, रांड़ी, छिन्दवाड़ा, नरसिंहपुर, गोटेगाँव, बरही, कटनी, कुण्डम, बालाघाट, सागर आदि के प्राध्यापकों और शोधार्थियों ने संगोष्ठी में भागीदारी की। डॉ. किरण शुक्ल प्राध्यापक चित्रकला ने वृद्धावस्था को केन्द्र में रखकर लाइव पेन्टिंग की जिसकी सभी ने बहुत सराहना की।

द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्रीमती निर्मला परांजपे एवं डॉ. शैलजा दुबे ने किया। प्रतिवेदक प्रो. डॉ. मीनू मिश्रा एवं डॉ. नीना उपाध्याय ने किया।

1. कु. सपना श्रीवारस्तव (शोधार्थी होमसाइंस कालेज) ने - "वृद्ध व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन" विषय पर अपना शोधालेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि क्या वृद्ध महिलाओं व पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य में अंतर होता है? वृद्ध पुरुषों का मानसिक स्वास्थ्य वृद्ध महिलाओं की अपेक्षा उत्तम होता है।
2. डॉ. शोभना पाण्डेय (सह प्राध्यापक शासकीय मानकुँवरबाई महिला महाविद्यालय) ने - "वृद्ध व्यक्तियों के कल्याणकारी कार्यक्रमों में सरकार प्रयास" विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। वृद्धावस्था कष्टप्रद, दुखदायी एवं जीवन की चौथी अवस्था है। वृद्ध महिलाओं की समस्याओं को शारीरिक, आर्थिक, मानसिक व पारिवारिक आधार पर बाँटा गया है। परिवार में बुर्जुगों की अनदेखी की जा रही है, समाज में उपेक्षा पूर्ण व्यवहार किया जा रहा है।
3. श्री श्यामसिंह (महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा) ने - "वृद्ध जनसंख्या में वृद्धि" विषय पर शोध पत्र का पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुतिकरण

किया। भारत और विश्व में बुजुर्गों की बढ़ती जनसंख्या को चुनौती के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। जापान को बुजुर्गों का देश कहा जाता है। जापान में बच्चे कम बुजुर्ग ज्यादा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में 60 वर्ष की आयु चीन में बुजुर्गों के कल्याण के लिए सबसे ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

4. सौम्या मिश्रा - (शोधार्थी) "वृद्धावस्था में ई शॉपिंग के उपभोक्ता अधिकार विषय पर पी.पी.टी. के माध्यम से प्रकाश डाला। 64 प्रतिशत वृद्धों ने ऑनलाईन शॉपिंग को स्वीकार किया, किन्तु उन्हें कन्ज्यूमर राईट की जानकारी नहीं थी, जिससे वे ठगी के शिकार हुए।
5. अनुष्का (शोधार्थी) होमसाइंस महाविद्यालय, जबलपुर) - "वृद्ध व्यक्तियों की शारीरिक मानसिक बीमारियाँ" विषय पर पी.पी.टी. प्रस्तुतिकरण किया। जबलपुर शहर के मेटाबॉलिज्म सिंड्रोम से ग्रसित वृद्ध व्यक्तियों के अध्ययन पर शोध आलेख प्रस्तुत किया।
6. प्रो. डॉ. शिखा गुप्ता - (विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, शासकीय मानकुँवरबाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिलाम महाविद्यालय, जबलपुर) ने "वृद्धों की समाज में स्थिति भारतीय समाज में वृद्धावस्था एक चुनौती" विषय पर शोधालेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि वृद्धों को आज की जीवन शली पसंद नहीं है, और युवाओं को उनकी जीवनशैली पसंद नहीं आ रही है। वृद्ध पुरुषों का 51 प्रतिशत और वृद्ध महिलाओं का 49 प्रतिशत भारत में है। 1 अक्टूबर 1999 'वृद्ध दिवस' के रूप में घोषित किया गया, जिससे समाज में वृद्धों को सम्मान मिल सके। युवा; वृद्धजनों को आर्थिक बोझ न समझें। वृद्धों की आबादी निरन्तर समाज में बढ़ती जा रही है। आगे आने वाले समय में वृद्धावस्था एक चुनौती के रूप में स्वीकार की जाएगी।
7. डॉ. शैलजा दुबे - "भारतीय समाज में वृद्धजन" विषय हमारी महत्वाकांक्षा ही ऐसी है जो हमें वृद्धावस्था में परेशानी की ओर ले जाती है। 8 से 12वीं के बच्चों से संपर्क किया तो पता चला कि वे अपने दादा-दादी के साथ रहना चाहते हैं। यदि हर परिवार अपने माता-पिता को अपने साथ रखें तो निश्चित रूप से वृद्धाश्रम की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अपने बुजुर्गों की सेवा नैतिक जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए।
8. अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ. निर्मला परांजपे ने कहा कि वृद्धावस्था एक चुनौती और अवसर है। यह विरासत में हमें मिला है, जो हम अपने बुजुर्गों के साथ करेंगे, वहीं हमारे बच्चे हमारे साथ करेंगे। ऑनलाईन शॉपिंग पर अभी बुजुर्गों का दृष्टिकोण विकसित नहीं हुआ है यदि वृद्धों की बीमारी देखें तो मानसिक और शारीरिक दो प्रकार की होती है मानसिक बीमारी वृद्धों के साथ परिवार के लोगों की भी परेशानी है,

- जो एक चुनौती है। युवाओं को वृद्धों की इन बीमारियों में विशेष देखरेख की आवश्यकता है। जनरेशन गैप होने के कारण उनकी समस्याओं का समाधान सरलता से नहीं हो पा रहा है। यदि बुजुर्ग ए.टी.एम. कार्ड है, तो बच्चे उनका आधार कार्ड है।
9. डॉ. भावना चौहान (अतिथि विद्वान अंग्रेजी, शासकीय मानकुंवरवाई महिला महाविद्यालय, जबलपुर) ने "वृद्धावस्था एक चुनौती नहीं वरन् अवसर है" विषय पर शोधपत्र का वाचन किया।
10. डॉ. ध्रुव कुमार दीक्षित (प्राध्यापक समाजशास्त्र, केसरवानी महाविद्यालय, जबलपुर) ने "भारतीय समाज में वृद्धजन" विषय पर वृद्ध जिन्दगी का एक बहुत अहम् हिस्सा है। वृद्धों को समस्या के रूप में ना ले। परिवार के पारिवारिक कार्यक्रम करते रहें तो बुजुर्गों को अकेलापन महसूस नहीं होगा और वे अपने का असहाय नहीं समझेंगे। आज वृद्धाश्रम की संख्या में इन्हीं कारणों से निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। परिवार परामर्श केन्द्र भी शहरों में तेजी से खुल रहे हैं। उसका मुख्य कारण घरों में बुजुर्गों का न रहना और उनकी सलाह न मानना है।
11. डॉ. माधवीलता दुबे (प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय, भोपाल) ने भारतीय समाज में वृद्धजन और उनकी समस्याओं पर प्रकाश डाला। वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों की स्थिति का समाज में होने वाले परिवर्तन को जिम्मेदार बताया। व्यक्ति श्राद्धपक्ष में बुजुर्गों के लिये कर्मकाण्ड करता है किन्तु उन्हें जीवित स्थिति में प्यार व सम्मान देना उचित नहीं समझता।

संगोष्ठी का समापन मुख्य अतिथि डॉ. प्रहलाद मिश्र सेवानिवृत्त प्राध्यापक समाजशास्त्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के मुख्य आतिथ्य, श्रीमती रजनी बाला सोहेल रेडक्रास वृद्धाश्रम की संरक्षिका के विशिष्ट आतिथ्य एवं प्राचार्य डॉ. गीता श्रीवातारतव की अध्यक्षता में हुआ। संगोष्ठी की संयोजक डॉ. सुषमा पेंढारकर थीं। सह संयोजक डॉ. सुधा मेहता के द्वारा संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये।

संगोष्ठी में लगभग 200 पंजीयन के साथ लगभग 55 शोधपत्र प्राप्त हुए। आपने समाज में वृद्धों की स्थिति व भूमिका पर प्रकाश डालते हुए समस्त शोध पत्रों के सार को प्रस्तुत किया। आपने बताया कि ये शोध पत्र निश्चित रूप से युवाओं को प्रेरणा देने में सहायक होंगे।

डॉ. प्रहलाद मिश्र ने अपने मुख्यातिथ्य उद्बोधन में कहा कि संगोष्ठी का विषय सामाजिक विज्ञान के सभी क्षेत्रों से संबद्ध है। सभी अपनी दृष्टि से इसका व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐतिहासिक युग में सामुदायिक समूह वृद्धों को संरक्षित करता था, कृषि युग में संयुक्त परिवार संरक्षण देता था, औद्योगिक युग में एकाकी परिवार प्रचलन बढ़ जाने से है। अब इसलिए सरकारी एवं ऐच्छिक संस्थानों के स्तर पर वृद्धों के संरक्षण की बात सामने आने लगी है।

विशिष्ट अतिथि श्रीमती रजनी बाला रोहेल ने कहा कि मैं वृद्धों के लिए काम करती हूँ। परिवार परामर्श केन्द्र के साथ ही एक आलम्बन शाखा बनी है, जो बुजुर्गों की समस्याओं का समाधान करती है। शहरों में वृद्धाश्रम में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धाश्रम खुलना अच्छा नहीं माना गया है, क्योंकि ग्रामीणजन इसे परिवार को तोड़ना मानते हैं।

संगोष्ठी के तकनीकी व समापन समारोह का सफल संचालन मनोविज्ञान विभाग की प्राध्यापक डॉ. शांता राव के द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. शिखा गुप्ता के द्वारा किया गया। महाविद्यालय की छात्राओं को इस विषय से जोड़ने के लिए स्वरिचत काव्यपाठ, रत्नोगन एवं निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा 100 छात्राओं से सर्वेक्षण कार्य इस विषय पर करवाया गया।

संगोष्ठी के पूर्व "भारतीय समाज में वृद्धजन" विषय पर निबंध प्रतियोगिता डॉ. नीना उपाध्याय एवं डॉ. रोजी मिश्रा के संयोजकत्व में, रत्नोगन प्रतियोगिता डॉ. स्मृति शुक्ला व डॉ. अर्चना सिंह के संयोजकत्व में तथा पेटिंग प्रतियोगिता डॉ. किरण शुक्ला के संयोजकत्व में सफलतापूर्वक आयोजित की गई।

अन्तिम तीनों विधाओं में विजेता छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। शोध संगोष्ठी का सफल संचालन प्रो. शांता राव द्वारा किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. शिखा गुप्ता, संगोष्ठी संयोजक डॉ. सुषमा पेंडारकर, सह संयोजक डॉ. सुधा मेहता, डॉ. मीनू मिश्रा, डॉ. नदिता प्रियंवदा त्रिवेदी, डॉ. अर्चना चतुर्वेदी, डॉ. मुक्ता ब्यौहार, डॉ. स्मिता जैन, डॉ. कामना श्रीवास्तव, डॉ. विनीता महोबिया, डॉ. ममता वर्मन, सहित महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक नगर के वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. गुरमीत सहित बड़ी संख्या में बुद्धिजीवी., वरिष्ठ नागरिक एवं शोधार्थी उपस्थित थे।

संगोष्ठी प्रभारी

प्राचार्य

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
“भारतीय समाज में वृद्धजन”
दिनांक 10.01.2019



सेमिनार का संचालन डॉ. सुषमा पेंढारकर द्वारा



सेमिनार में उपस्थित अतिथिगण, सहभागी एवं महाविद्यालय परिवार

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी “भारतीय समाज में वृद्धजन” दिनांक 10.01.2019



सेमिनार में अतिथियों का उद्बोधन



शोध संगोष्ठी में प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुये अतिथिगण

प्रतिपुष्टि

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के विषय, प्रस्तुत शोध पत्र एवं वक्तव्य की अभिव्यक्ति की सार्थकता, ग्राह्यता एवं आयोजन के संदर्भ में सहभागियों में निम्न विचार प्रतिपुष्टि में व्यक्त किये हैं जो शोध संगोष्ठी के सफल आयोजन को दर्शाते हैं -

विषय की सार्थकता : शोध संगोष्ठी में चयनित विषय "भारतीय समाज में वृद्धजन" समसामयिक एवं महत्वपूर्ण ज्वलंत विषय रहा है।

प्रस्तुत शोधपत्र : शोध संगोष्ठी में विषय से संबंधित संवेदनशील सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक बिन्दुओं पर सारगर्भित शोधपत्र प्रस्तुत एवं विचार विमर्श किया गया।

प्रस्तुत वक्तव्यों की सार्थकता :

- i. प्रस्तुत वक्तव्य एवं चर्चा युवाओं के लिए प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक रहा
- ii. जो युवाओं का वृद्धों के प्रति संवेदानात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में सफल होगा।
- iii. वृद्धों की स्थिति, चुनौतियों एवं समाधान प्रस्तुत करने में संगोष्ठी सफल रही।
- iv. समाजशास्त्र, मनोविज्ञान एवं अन्य विषयों के दृष्टिकोण से विषय पर विचार रखे गये जो वृद्धजन में क्षमता के अनुरूप समाज कल्याणकारी/सेवा में सहभागिता विकसित करना, सामुदायिक उत्तरदायित्व की समझ विकसित करेगा।
- v. भावी शोध के लिए नवीन बिन्दु एवं दृष्टिकोण चर्चा से निकलकर आए।

ब्याचार : चित्रकला विभाग की विभागाध्यक्ष द्वारा शोध संगोष्ठी में विषय का प्रस्तुतीकरण लाइवपेन्टिंग से किया गया जो अद्भुत एवं सराहनीय रहा साथ ही, सर्वेक्षण र्लोगन, काव्य एवं निबंध प्रतियोगिता के माध्यम से महाविद्यालयीन छात्राओं की सहभागिता रही है एवं संगोष्ठी के उद्देश्य एवं आयोजन की सार्थकता एवं सफलता को दर्शाता है।

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
“भारतीय समाज में वृद्धजन”

जनवरी 10, 2019



- प्रायोजक -
उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल
- आयोजक -
समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान विभाग

प्रति,

संरक्षक
डॉ. (श्रीमती) गीता श्रीवास्तव
प्राचार्य

संयोजक
डॉ. (श्रीमती) सुषमा पेंडारकर

सहसंयोजक
डॉ. (श्रीमती) सुधा मेहता



राज्यस्तरीय मानकंद्वार बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)
बैंक द्वारा प्रकृत 'A' ग्रेड